



चार मित्र

बुकबॉक्स द्वारा पुनर्कथित।

किसी भी शहर से बहुत दूर एक जंगल था, जहाँ सभी जानवर और पक्षी मिलजुल कर शांति से रहते थे। इसी जंगल में चार गहरे दोस्त रहते थे - एक हिरण, एक कछुआ, एक कौआ और एक चूहा। वे हर शाम मिलते और दिनभर की घटनाएँ एक-दूसरे को सुनते-सुनाते।

लेकिन एक दिन हिरण बहुत डरा हुआ था। “शिकारी सब जगह जाल बिछा रहे हैं, क्या हमारे बचने का कोई उपाय है?” “हाँ, है।” कौआ बोला, “जैसा कि हमारे चूहे मित्र को मालूम है।”

कौए ने जो देखा, बताना शुरू कर दिया, “अभी उस दिन, मैंने बड़ी ही अनोखी चीज़ देखी, कबूतरों का एक झुंड किसी शिकारी के जाल में फँस गया था और अपने पंख तेज़ी से फड़फड़ा रहा था। तभी अचानक, सब कबूतरों ने मिलकर जाल को अपनी चोंच में पकड़ा और आकाश में उड़ गए। और वे गए कहाँ?”





सीधे हमारे मित्र चूहे के पास! जिसने अपने तेज़ दाँतों से कुतरकर जाल के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। और कबूतर आज़ाद हो गए। वे हमारे मित्र के प्रति बहुत कृतज्ञ थे।” कहानी सुन लेने पर हिरण का हौसला बढ़ा। वह पानी की खोज में गया। इस बीच, ये तीनों मित्र जंगल के फल, यहाँ की झाड़ियाँ और पतियाँ कुतरने लगे।

अपने मित्र हिरण के लौटने की प्रतीक्षा करते हुए वे देर रात तक बातें करते रहे, किंतु हिरण का कोई पता न देख मित्र, चिंता में पड़ गए। सुबह जब और सभी हिरण को पुकारते रहे, कौआ हर दिशा में उड़ता हुआ उसे खोजता रहा। एक सूनी जगह पर उसने हिरण को देखा। उसका पैर जाल में फँसा हुआ था।

“चिंता मत करो” उसने शांति से कहा। “हम कुछ उपाय करेंगे।” कौआ तेज़ी से अपने मित्रों के पास लौटा। कछुए को एक उपाय सूझा। उसने कहा, “चूहे, जल्दी से कौए की पीठ पर चढ़ जाओ।” और वे उड़कर हिरण को बचाने चले। बिना समय गँवाए चूहे ने जाल को काट डाला।

उसी वक्त परेशान कछुआ भी वहाँ पहुँच गया। हिरण चिल्लाया, “तुम यहाँ क्यों आए? अगर शिकारी लौट आया तो तुम कभी नहीं भाग सकोगे,” और शिकारी आ ही पहुँचा! उसके पैरों की आहट सुनकर वे सब भाग गए, लेकिन कछुआ पीछे रह गया। शिकारी ने उसे उठाया और एक लकड़ी से बाँधकर कंधे पर ढो लिया।





“अरे, नहीं! मेरे कारण बेचारा कछुआ मुसीबत में है।” हिरण ने कहा। अचानक हिरण ने छलाँग मारी और रास्ते के निकट तालाब की ओर दौड़ा। वह वहाँ एकदम निश्चल लेट गया, जब कि कौआ उसको चोंच से मारने लगा। जब शिकारी ने हिरण को उठाने के लिए कछुए को नीचे गिराया, चूहे ने तेज़ी से उसके पैरों की रस्सी कुतरकर कछुए को आज़ाद कर दिया।

ज्यों ही कछुआ पानी में फिसला, हिरण झपक कर गायब हो गया और कौआ फुर से उड़ गया। शिकारी भय से काँप उठा। उसने किसी भी जानवर को फिर से जिंदा होते हुए कभी नहीं देखा था। उसने सोचा, यह जंगल भुतहा है, और अपने प्राण बचा कर भागा। चारों मित्र वापिस लौट आए, और एक बार फिर वे एक साथ रहते हुए खुश थे।

समाप्त

© BookBox. All Rights Reserved.
www.bookbox.com



Click below to follow us:



YouTube

facebook